वर्ष – 02 अंक – 07, ISSN-2993-4648

Dedicated for Research
Shodh Utkarsh

July - September

# शोध उत्कर्ष
# Shodh Utkarsh

A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly international
E- Research Journal, Impact factor-03

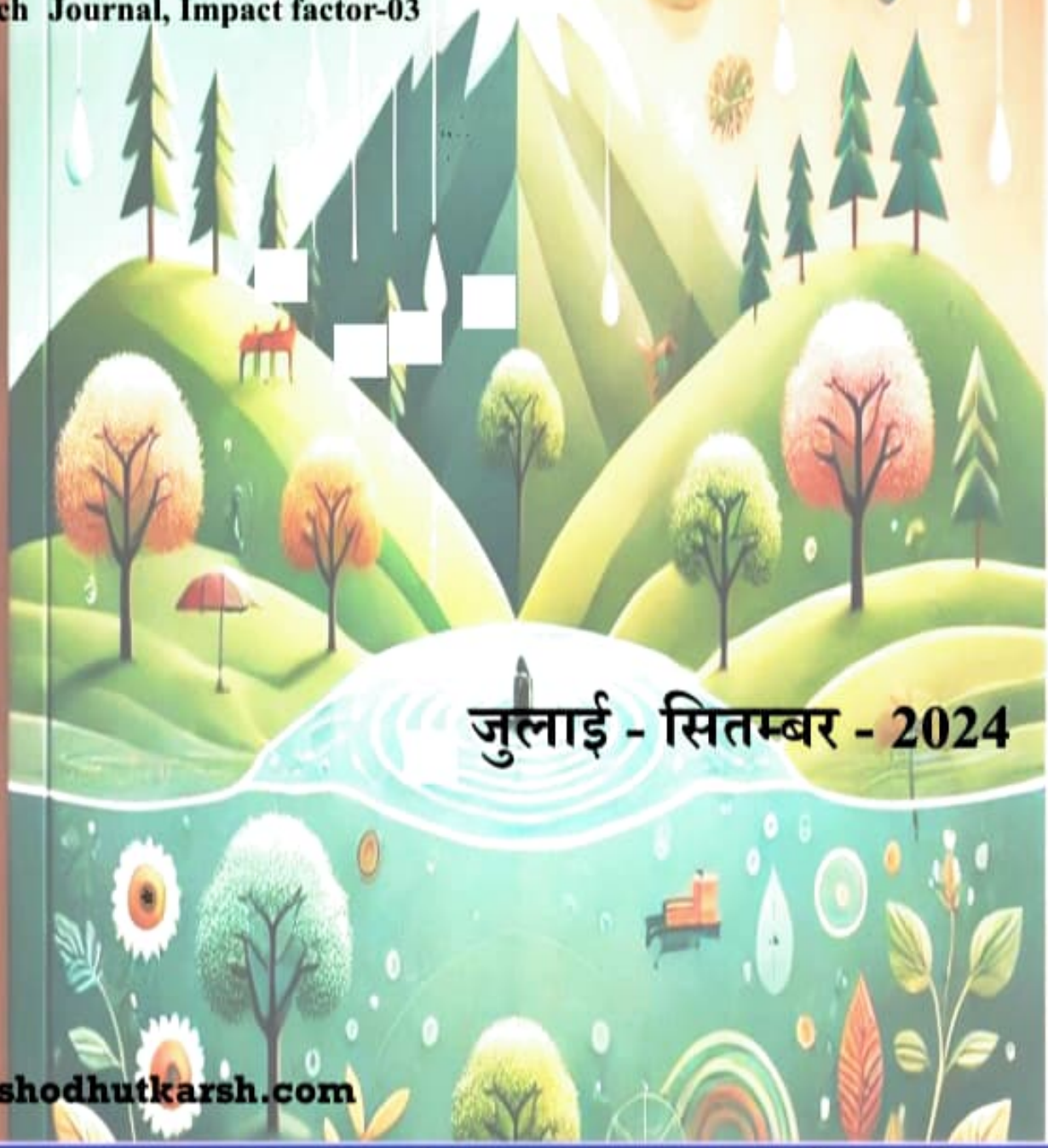

## जुलाई - सितम्बर - 2024

https://shodhutkarsh.com

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh (RESEARCH ARETE JOURNAL)

अतिथि संपादक - डॉ.बालेन्द्र सिंह यादव त्रैमासिक ऑनलाइन जर्नल - 'शोध उत्कर्ष'

शोध उत्कर्ष
Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly international Research E-Journal
वर्ष-02 अंक - 07 जुलाई - सितम्बर -2024

## Table of Content


| S.N. | Title and Name of Author(s) | Page No. |
|---|---|---|
| | **संपादकीय-** | 01 |
| 1. | मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का बिखराव एवं किशोरवय पर उसका दुष्प्रभाव- **प्रो. यशवंत सिंह** | 2-4 |
| 2. | गद्दी समुदाय के अधिष्ठाता-कुलदेव कार्तिक स्वामी - **प्रो. (डॉ.) सुमन शर्मा & डॉ. भरत सिंह** | 5-8 |
| 3. | वागर्थ के गौरव : कवि केदारनाथ अग्रवाल - **प्रो. चंद्रकांत सिंह** | 9-12 |
| 4. | बघेली भाषा में कविता के विविध आयाम - **डॉ. निरपत प्रसाद प्रजापति** | 13-17 |
| 5. | ग्रामीण भारतीय विद्यार्थी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 - **श्रीमती मोनिका शर्मा** | 17-18 |
| 6. | लोकगीत का महत्व एवं विशेषताएँ महाकौशल क्षेत्र की गोंड जनजाति विशेष सम्बन्ध में- **पूजा दाहिया&गोविंद पाण्डेय** | 19-23 |
| 7. | तुलसी के राम - **डॉ. निशा पटेल** | 23-24 |
| 8. | मैलयालम लेखिका कमला सुरैया की कहानियों में मातृत्व की झलक - **डॉ. सनोज पी.आर** | 25-26 |
| 9. | Role of tourism development schemes like VCSGPSY in tourism development in the state of Uttarakhand - **Rohit Joshi & Prof. B. D. Kavidayal** | 27-34 |
| 10. | International initiatives for Disabled children- **Dr.Nibedita Priyadarshani** | 35-39 |
| 11. | 'JHARCRAFT': An Interventional Development for Tribes in Jharkhand- **Amit Kumar** | 40-46 |
| 12. | राम भक्ति काव्य परंपरा में महाकवि तुलसी का स्थान - **डॉ. सजिना. पी. एस.** | 47-48 |
| 13. | अपनों के बीच में पराए हो जाने की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यंजना- 'वापसी' कहानी - **डॉ. प्रमोद पडवळ** | 49-51 |
| 14. | सुभद्रा कुमारी चौहान एवं स्त्री दृष्टि - **प्रियंका सिंह** | 52-53 |
| 15. | हिमांशु जोशी कृत 'कगार की आग' उपन्यास में ऑचलिकता - **नवीन नाथ** | 53-54 |
| 16. | परसाई की पारसाईता - **चेतन चंद्र जोशी** | 55-56 |
| 17. | A Complete Investigation of The Chemistry and Molecular Pharmacology of Benzimidazole - **Ashutosh Pathak** | 56-62 |
| 18. | Potential Role & efficiency of Goods and services tax (GST) in managing public debt in India – **Indranil Roy& Dr. Mousumi Borah** | 63-68 |


**********

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 02 अंक– 07 जुलाई - सितम्बर -2024 Impact factor– 03

# गद्दी समुदाय के अधिष्ठाता-कुलदेव कार्तिक स्वामी

**प्रो. (डॉ.) सुमन शर्मा**
कुलसचिव
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

**डॉ. भरत सिंह**
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग, डीएवी. महाविद्यालयकाँगड़ा, हि.प्र.
मो. 8219775906

**शोध सार :-**

गद्दी समुदाय भगवान शिव के पश्चात जिस अधिष्ठाता देव को अपना आराध्य एवं कुलदेव की संज्ञा देते हैं वह भरमौर जनपद से 28 कि. मी. दूर प्राकृतिक सुषमा से सम्पन्न जैविक गाँव कुगती की तलहटी पर विराजमान 'केलंग' (कार्तिकेय) बजीर हैं। लोकमान्यताओं के अनुसार जब भगवान कार्तिकेय को ज्ञात हुआ कि माता पार्वती ने गणेश का राज्याभिषेक करवा दिया है तो वे क्रोधित हो उठे और माता पार्वती को उनके द्वारा दिए गए शरीर और दूध वहीं अर्पण करके अपना कंकाल स्वरूप लेकर कैलाश पर्वत से निकल पड़े। कहा जाता है कि कैलाश पर्वत से कार्तिकेय स्वामी सीधे कुगती पहुँचे थे और वहाँ पर कुछ देर विश्राम करने के पश्चात लाहौल की ओर प्रस्थान कर गए। कुगती में जिस स्थान पर भगवान कार्तिकेय स्वामी ने विश्राम किया था उस स्थान पर आज भी लोग पूजा करते हैं। लाहौल में कई देवताओं के मनाने के बावजूद भी कार्तिकेय स्वामी नहीं माने और अंततः भोलेनाथ ने स्वयं आकर उनको मनाया और उन्हें पुनः कैलाश पर्वत पर चलने को कहा। लेकिन, कार्तिकेय ने भोलेनाथ से कहा कि वह अब कैलाश तो नहीं जाएंगे, किन्तु पिता जी की आज्ञा का पालन करते हुए कैलाश पर्वत के पीछे एक पहाड़ी पर निवास करने का वचन दिया। बताया जाता है कि जिस स्थान को कार्तिकेय ने अपने आवास के लिए चुना उस स्थल को 'शिव-भयाली' कहा जाता है। पौराणिक जनश्रुतियों के अनुसार केलंग, भगवान शिवजी के पुत्र तथा देवताओं के बजीर (सेनापति) हैं। लोकगीतों के अनुसार कार्तिकेय लाहौल के 'केलांग' नामक स्थान से' बरसैंण' उपजाति के पुहाल के नर भेड (मेढ़ा) के सींग पर नाग अथवा संगल/'सोठू' रूप में कुगती की तलहटी में आकर पहुँचे थे। वर्तमान में' भुण्खार' नामक स्थान पर कार्तिकेय अपनी बहन मराली के साथ विराजमान हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर कार्तिक स्वामी की स्वयंभू मूर्ति भी प्रकट हुई है । यह मूर्ति आज भी मन्दिर में विराजमान है। इनका वाहन मोर है।

इस मन्दिर में सदियों से जो प्रथाएं प्रचलित हैं, उनका स्वरूप वर्तमान में भी दृष्टव्य होता है। गद्दी समुदाय का मुख्य व्यवसाय भेड़-बकरी पालन रहा है अतः यह समुदाय अपने रेवड़ सहित पर्वतीय-समतलीय भूभाग में विचरण करते रहते हैं। विचरण की इस प्रक्रिया के निमित्त कुलदेव कार्तिक स्वामी सदैव उनके रक्षक का कार्य करते हैं। गद्दी समुदाय में भगवान कार्तिक स्वामी की इतनी मान्यता है कि इनके परिवार/कुटुंब के किसी एक सदस्य को इनका 'लांण'/लैब (पहनावा, टोप-तुरआर) लगाना अपरिहार्य होता है। इस मन्दिर की विशेषता यह है कि नवम्बर महीने के अंत में इनके कपाट बंद हो जाते हैं और अप्रैल में बैसाखी के दिन विधिवत रूप से खुलते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में भगवान कार्तिक स्वामी की उत्पत्ति, मन्दिर के संदर्भ में लोकमान्यता, 'लांण'/लैब पहनने, कलश रखने की मान्यता, कपाट खुलने और बंद करने आदि के सम्बन्ध में विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है।

**बीज शब्द :** कार्तिक स्वामी, केलंग बजीर, माता मराली, गद्दी, कुगती, भरमौर

**मूल आलेख :-**देव सेनापति नायक, शिव-पार्वती सपुत्र, तारकासुर संहारक भगवान कार्तिक स्वामी को भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है। दक्षिण भारत में इन्हें सुब्रह्मण्यम्, महाराष्ट्र में 'कुमारस्वामी' तथा अन्य क्षेत्रों में 'मुर्गन', गांगेय, गुह, महासेन, कुमार चन्द्र आदि नामों से अलंकृत किया जाता है। वहीं उत्तरी भारत की गद्दी समुदाय इन्हें 'केलंग-बजीर' के नाम से पूजता है। पुराणों और गद्दी लोकसंस्कृति में कार्तिकेय की उत्पत्ति के सम्बन्ध निम्नलिखित मान्यताएँ हैं-

**धार्मिक ग्रंथों में कार्तिकेय की उत्पत्ति –**

धार्मिक ग्रथों में कार्तिकेय की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दो कथाएँ प्रचलित हैं। "एक कथा के अनुसार इन्हें अग्नि और 'स्वाहा' का पुत्र माना जाता है और दूसरी कथा के अनुसार इन्हें शिव और पार्वती का पुत्र माना जाता है। दोनों दशाओं में इनका जन्म गंगा नदी के पानी में हुआ अतः यह गांडेय के नाम से प्रसिद्ध हुए।" किन्तु इन्हें सर्वदा शिवपुत्र माना जाता है। सृष्टि के आरम्भ में शिवजी को देवताओं के सेनापति का कार्य निभाना पड़ा। काफी समय अपना कर्तव्य निभाते हुए शिवजी थक गए। अतः कैलाश पर्वत पर तपस्या में लीन हो गए। सुअवसर पाकर राक्षसों ने उत्पात मचाना प्रारम्भ कर किया। उन्होंने इन्द्र का हाथी, कुबेर के एक हजार घोड़े और ऋषि की कामधेनु गाय चुरा ली। इन्द्र जी यह सबकुछ सहन न कर सके अतः वह जंगलों में पलायन कर गए। एक दिन जंगल में क्या देखते हैं 'केसनी' नामक राक्षस ने देवसेना नामक युवती को दबोच लिया है। उसका सतीत्व खतरे में था अतः उसने शोर मचाना आरम्भ किया। भाग्यवश इन्द्र उसकी रक्षा के लिए प्रकट हुए। युवती ने सुरक्षा पाकर इन्द्रदेव से प्रार्थना की कि उसका पति इतना वीर हो कि इन राक्षसों का संहार कर सके। इस वर की प्राप्ति के लिए इन्द्रदेव ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने कहा 'इस प्रकार के वीर का जन्म गंगा के पानी में होगा, वही इस युवती का पति होगा।'

इसी प्रसंग के निमित्त एक बार सप्तऋषि एक स्थान पर हवन करने में व्यस्त थे। अतः अग्निदेव सप्तऋषि की पत्नियों पर मोहित हो गए। वह आशा पूर्ण न होने पर जंगल में चले गए। उधर दक्ष प्रजापति की पुत्री स्वाहा ने मौका पाकर अपना रूप बारी-बारी से सात ऋषियों की पत्नियों का धारण किया और सात बार अग्नि का अंश प्राप्त कर एक सोने के बर्तन में रखा। उस सोने के बर्तन को गंगा नदी में डाल दिया। वहीं कार्तिकेय ने जन्म लिया। यह बच्चा छः राजकुमारियों को मिला वे उसकी सुन्दरता देखकर उन्हें अपनाने का प्रयत्न करने लगीं। कार्तिकेय ने छः मुख धारण कर प्रत्येक की छाती से दूध पिया अतः उन्हें षण्मुख भी कहा जाता है।

वहीं दूसरी कथा के अनुसार देवताओं के महा सेनानायक शिवजी कैलाश पर्वत पर तपस्या में मग्न हो गए। उनकी तपस्या को कोई भी व्यक्ति या देव भंग करने में समर्थ न था। वहीं तारकासुर ने मौका पाकर ब्रह्मा से वर प्राप्त किया कि उसे शिव पुत्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी मारने में असमर्थ होगा। वह जानता था कि शिव तपस्या में लीन हैं और उनका पुत्र उत्पन्न होना असम्भव है अतः उसने सोचा अब वह अजर-अमर है। फलस्वरूप उसने देवताओं पर अत्याचार करने शुरू किए। देव उसके उत्पात से आतंकित होकर ब्रह्मा के पास गए। ब्रह्मा ने उन्हें आश्वासन दिया कि गंगा के पानी में शिव-पार्वती के